Tel. : 9342254131

ओ३म्

Email : aryasamajmarathalli@yahoo.co.in
www.bangalorearyasamaj.com

स्वामी दयानन्द सरस्वती

आर्य ज्योति
ARYA JYOTI
ಆರ್ಯ ಜ್ಯೋತಿ

September-2025

Arya Samaj Marathalli Monthly Newsletter

Sunday Weekly Satsang : 10.00 a.m. to 11.30 a.m.

आर्य समाज मारतहल्लि, बंगलौर का 18वाँ स्थापना दिवस एवं सत्संग समारोह पूर्वक हुआ सम्पन्न

आर्य समाज मारतहल्लि, बंगलौर महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों को आगे बढ़ाने में अग्रसर है

– फकीरे दयानन्द (श्री एस.पी. कुमार)

हमें महर्षि दयानन्द जी के सिद्धान्तों को आगे बढ़ाने का कार्य करते रहना चाहिए – डॉ. रवि भटनागर

महर्षि दयानन्द जी की विचारधारा का प्रचार–प्रसार करना हमारा लक्ष्य – आचार्य श्रद्धानन्द

बेंगलुरु : 31 अगस्त 2025, आर्य समाज, मारतहल्लि का 18वाँ स्थापना दिवस बड़े हर्षोल्लास एवं भव्यता के साथ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर अध्यक्षता फकीरे दयानन्द श्री एस.पी. कुमार जी ने की। समाज के प्रधान श्री एच.सी. शर्मा जी, मंत्री श्री अभिमन्यु कुमार सहित समस्त पदाधिकारी एवं सदस्यगण उपस्थित रहे।

कार्यक्रम का शुभारम्भ प्रातः 10 बजे वैदिक यज्ञ के साथ हुआ। यज्ञ के ब्रह्मा पद पर धर्माचार्य श्री रामतीर्थ शास्त्री जी आसीन हुए। तत्पश्चात् अजमेर से पधारे आचार्य श्रद्धानन्द जी का सारगर्भित मुख्य उद्बोधन हुआ।

इस अवसर पर श्रीमती प्रेम अरोड़ा जी, श्री योगेश अरोड़ा जी, धर्माचार्य श्री रामतीर्थ शास्त्री जी एवं बच्चों ने वैदिक भजन व संगीत प्रस्तुत कर सभी को मन्त्र–मुग्ध कर दिया।

आचार्य श्रद्धानन्द (अजमेर) ने स्थापना दिवस की शुभकामनाएँ देते हुए कहा कि आर्य समाज मारतहल्लि अपने स्थापना–काल से ही निरन्तर महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की विचारधारा और सिद्धान्तों के अनुरूप समाज सेवा एवं वैदिक धर्म प्रचार–प्रसार में संलग्न है। यहाँ अपने विचार प्रकट करने का अवसर मुझे समय–समय पर मिलता रहा है, जिसके लिए मैं श्री कुमार जी और उनकी पूरी टीम का आभारी हूँ।

श्री रवि भटनागर जी ने अपने विचार रखते हुए बताया कि 'आर्य समाज' दो शब्दों से मिलकर बना है – 'आर्य' अर्थात श्रेष्ठ और 'समाज' अर्थात समूह। महर्षि दयानन्द जी ने अपने योग, तप और वेदज्ञान के आधार पर इस

शेष पृष्ठ 7 पर

हमारे सत्संग

वेद ज्ञान ही सम्पूर्ण ज्ञान है

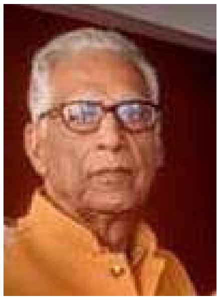

आर्य समाज, मारतहल्लि, बंगलौर के 3 अगस्त, 2025 के रविवारीय सत्संग में फकीरे दयानन्द श्री एस.पी. कुमार जी ने श्रावण मास के महत्व एवं ऋषि–मुनियों के ज्ञान पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने श्रावण मास को वेद सप्ताह के रूप में मनाने का निर्देश दिया था, क्योंकि यह मास आध्यात्मिक उन्नति का प्रतीक है।

उन्होंने कहा कि जब समाज वेदों को भूल चुका था, तब महर्षि दयानन्द ने वेद–प्रचार को तीव्र गति प्रदान की। उनका उद्देश्य था कि श्रावण मास में वेद प्रचार सप्ताह आयोजित कर लोगों को वेदों की ओर लौटने की प्रेरणा दी जाए। वेद हमें उत्तम ज्ञान देने वाले दिव्य ग्रंथ हैं। जिस प्रकार एक बालक को ज्ञान अपनी माता से प्राप्त होता है, उसी प्रकार वेद भी 'वेदमाता' के रूप में हमें आत्मिक, बौद्धिक और नैतिक उन्नति का मार्ग दिखाते हैं।

महर्षि दयानन्द जी ने स्पष्ट किया कि वेदमाता एक ही है, जबकि जन्मदात्री माताएं अनेक हो सकती हैं। वेदमाता हमें सद्बुद्धि देती है, जीवन का मार्ग दिखाती है और सम्पूर्ण मानव समाज के कल्याण का कारण बनती है। वेद का श्रवण करना भी पुण्यदायक है, भले ही सभी उसे पढ़ न सकें। यदि हम वेद मार्ग के अनुयायी बनें तो निश्चित ही जीवन का कल्याण हो सकता है।

सभी धर्म–सम्प्रदायों के मूल में वेद ही हैं। वेदों का ज्ञान अमृत है, सोमरस के समान पावन और जीवनदायक। अमृत वह है जो नश्वर नहीं है–आत्मा, परमात्मा और प्रकृति अमृत हैं, और इन तीनों का समन्वय ही जीवन और जगत का स्वरूप है। ईश्वर इस जगत में भी व्याप्त है और इसके बाहर भी। वह चेतन है, उसकी चेतना से ही सृष्टि में क्रिया, रूपान्तरण और स्थानान्तरण संभव होता है।

जगत सीमित है, परन्तु परमात्मा असीमित है। हम दृश्य जगत को तो देख पाते हैं, पर ईश्वर को प्रत्यक्ष नहीं देख सकते, उसे केवल वेद ज्ञान से जाना जा सकता है। वेद हमें बताते हैं कि हम कौन हैं, और ईश्वर हमें जीवन–यापन का सत्य मार्ग निर्देशित करता है।

जब आत्मा, प्रकृति और परमात्मा अमृत हैं, तो यह जीवन भी अमृत है। इसलिए हमें वेद मार्ग पर चलकर जीवन का श्रेष्ठ उपयोग करना चाहिए। यदि ब्रह्म की प्राप्ति करनी है, तो वह केवल ज्ञान से संभव है, और वह ज्ञान ईश्वर ने वेद के रूप में हमें दिया है।

महर्षि दयानन्द का उद्घोष था–"वेदों की ओर लौटो"। अमृत पथ पर चलकर ही आत्मा का उत्थान संभव है।

चारों वेदों की विशेषता बताते हुए उन्होंने कहा कि ऋग्वेद – सृष्टि के गूढ़ रहस्यों और सृष्टि के ज्ञान का व्यापक ग्रंथ है। यजुर्वेद – हमें कर्म करने का ज्ञान देता है, जिससे हम अपने दायित्वों का सही निर्वहन कर सकें। सामवेद – यह बताता है कि किसे जानना है और कैसे मानना है, यानी उपासना और भक्ति का मार्गदर्शन देता है। अथर्ववेद – इसके प्रथम भाग में आयुर्वेद अर्थात स्वास्थ्य एवं दीर्घायु के उपाय हैं, और द्वितीय भाग में ज्ञान–विज्ञान का विस्तार है।

उन्होंने चिंता प्रकट की कि आज मानव ज्ञान–विज्ञान का दुरुपयोग कर रहा है और ईश्वर प्रदत्त मार्ग से विचलित हो गया है। इसके परिणामस्वरूप संसार में विनाश, युद्ध, आपदाएँ और अन्य दैविक घटनाएँ बढ़ रही हैं।

जब मनुष्य विद्वानों की संगति करता है तो निश्चित रूप से वह सत्यज्ञान प्राप्त करता है। यही ज्ञान उसे अमृत मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता है। वेद ही वह दिव्य प्रकाश है, जो हमें आत्मकल्याण और लोकमंगल की ओर अग्रसर करता है। अतः हमें वेद मार्ग को अपनाकर अमृत जीवन की ओर बढ़ना चाहिए। यही वैदिक धर्म का मूल संदेश है।

बन्धन का तात्पर्य है – कर्त्तव्य

आर्य समाज, मारतहल्लि, बेंगलुरु के 10 अगस्त 2025 के रविवारीय सत्संग में धर्माचार्य श्री रामतीर्थ शास्त्री जी ने गायत्री मन्त्र के उच्चारण के उपरान्त उपस्थित जनसमुदाय को सम्बोधित करते हुए कहा कि आज हम सब श्रावणी पर्व का उत्सव मना रहे हैं। यद्यपि सम्पूर्ण मास ही यह पर्व अनेक रूपों में मनाया जाता है, किन्तु इसका सार एक ही है – ईश्वर से हमारा सम्बन्ध अखण्ड बना रहे। चाहे होली हो, दीपावली हो अथवा कोई अन्य उत्सव, सभी का मूल उद्देश्य यही है कि हम प्रकृति और परमात्मा के निकट रहें।

श्रावणी पर्व ही वास्तविक पर्व है – जिसका लोक–प्रचलित रूप 'रक्षाबन्धन' है। 'श्रावणी' का तात्पर्य है – ईश्वर का चिन्तन, मनन, अध्ययन एवं श्रवण। इस दिन का स्मरण हमें यह सन्देश देता है कि हम स्वाध्याय और श्रवण के पथ पर आलस्य या प्रमाद के बिना अग्रसर रहें।

बन्धन ही रक्षा है – ईश्वर के नियमों के बन्धन में रहेंगे तो जीवन की रक्षा होगी; सामाजिक बन्धनों में बँधेंगे तो समाज की रक्षा होगी; संविधान के बन्धनों में बँधेंगे तो राष्ट्र की रक्षा होगी। जिस दिन हम इन बन्धनों को तोड़ देंगे, उसी दिन पतन का आरम्भ हो जायेगा। भाई–बहन का परस्पर स्नेह, बड़ों का अनुशासन, छोटों का आदर – ये सभी जीवन के सुरक्षात्मक सूत्र हैं।

आर्य समाज का मत है – कर्म भी करो और भक्ति भी करो। केवल 'राम' नाम का उच्चारण पर्याप्त नहीं, बल्कि श्रीराम के पदचिन्हों पर चलना आवश्यक है। वेद–मन्त्रों का केवल पाठ या श्रवण ही नहीं, अपितु उन्हें जीवन में धारण करना ही सच्ची उपासना है। महर्षि दयानन्द का उपदेश है – ईश्वर से अपने को जोड़ो, स्वयं को उनके बन्धन में रखो।

जैसे माता–पिता अपने बालक की सेवा निष्काम भाव से करते हैं, वैसे ही पारिवारिक और सामाजिक दायित्व भी निष्काम भाव से निभाने चाहिएं। यही सच्चा सुखदाता कर्म है।

श्रावणी पर्व के व्रत का तात्पर्य – हमारे ऊपर जो तीन ऋण हैं, उनसे उऋण होने का संकल्प लेना।

पितृ ऋण – पूर्वजों के प्रति कृतज्ञता और वंश की मर्यादा का पालन।

गुरु ऋण – विद्या, संस्कार और मार्गदर्शन का प्रतिदान।

देव ऋण – ईश्वर, प्रकृति और समस्त सृष्टि के प्रति सेवा एवं संरक्षण।

इन ऋणों से मुक्ति का मार्ग है – सामाजिक, सांसारिक और आध्यात्मिक कर्त्तव्यों का सम्यक पालन।

शास्त्री जी ने उपनयन संस्कार की महत्ता पर विशेष प्रकाश डालते हुए कहा कि आज समाज में शिक्षित वर्ग भी अपने कर्त्तव्यों से विमुख हो रहा है, जिसके कारण विकृतियाँ और अन्याय बढ़ रहे हैं। वेद का श्रवण हमें ज्ञान देता है, और वही ज्ञान हमें कल्याण के मार्ग पर चलाता है।

वेदों के अनुसार चार वर्णों के कर्त्तव्य – रक्षा और शौर्य के पालन में स्थित क्षत्रिय, वेदज्ञान के अध्येता और शिक्षक ब्राह्मण, पालन–पोषण और व्यापार में तत्पर वैश्य, सेवा और श्रम में निष्ठावान शूद्र।

जब सभी अपने–अपने धर्म–बन्धनों में बँधकर चलेंगे, तभी सच्ची रक्षा सम्भव है। अतः बन्धन का अर्थ है – कर्त्तव्य। कर्त्तव्यों में बँधा हुआ जीवन ही सुरक्षित, अनुशासित और कल्याणकारी होता है।

योगेश्वर श्रीकृष्ण जी के जीवन से प्रेरणा लेकर कार्य करना चाहिए

आर्य समाज, मारतहल्लि, बेंगलुरु के 17 अगस्त 2025 के रविवारीय सत्संग में ब्रह्मचारी श्री शिवस्वरूप जी ने गायत्री मन्त्र के पवित्र उच्चारण के साथ अपने उद्बोधन का शुभारम्भ करते हुए कहा कि योगेश्वर श्रीकृष्ण जी का जन्म कठिन और विषम परिस्थितियों में हुआ। रात्रि में, कारागार के भीतर जन्म लेकर भी उन्होंने यह सिद्ध कर दिया कि आत्मा का प्रकाश अन्धकार को मिटा देता है। इसी प्रकार मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीरामचन्द्र का जन्म भी रात्रि में हुआ। यह प्रतीक है कि धर्म और प्रकाश का अवतरण अन्धकार और अधर्म के बीच होता है।

श्रीकृष्ण जी ने महर्षि संदीपन के गुरुकुल में वेद, शास्त्र और शस्त्र का गम्भीर अध्ययन किया। उनका जीवन गऊ माता की सेवा और संरक्षण से जुड़ा हुआ था। वैदिक संस्कृति में गौ पालन केवल एक अर्थोपार्जन का साधन नहीं, बल्कि धर्म और आरोग्य का आधार माना गया है।

आयुर्वेद में स्पष्ट कहा गया है कि गौ के दूध, दही, घी, मूत्र और गोबर में रोगनाशक, पवित्रता और स्वास्थ्य वर्धक गुण हैं।

गोबर से लिपी हुई भूमि पर चलने से उच्च रक्तचाप (ब्लड प्रेशर) में लाभ मिलता है।

गौ दुग्ध और दही से शारीरिक बल, मानसिक शान्ति और ओज–तेज की वृद्धि होती है।

यही कारण है कि भगवान श्रीकृष्ण जी की प्रिय वस्तुएँ – दूध, दही, माखन उनके जीवन की सहज प्रेरणा हैं।

आज दुर्भाग्य है कि अंग्रेजों के प्रभाव से हमारी संस्कृति को तोड़ा–मरोड़ा गया और बच्चों को दूध–दही से दूर कर केवल चाय–कॉफी तक सीमित कर दिया गया। इसका परिणाम है – छोटी आयु में ही चश्मे और रोग। इसीलिए गौ माता को 'सर्वमाता' कहा गया है।

महाभारत का युद्ध केवल दो पक्षों का संघर्ष नहीं था, बल्कि धर्म और अधर्म का युद्ध था। जब श्रीकृष्ण दुर्योधन के पास केवल पाँच गाँव माँगने गये और दुर्योधन ने सुई की नोक के बराबर भूमि देने से भी इन्कार किया, तब यह स्पष्ट हो गया कि अधर्म से समझौता सम्भव नहीं।

यही कारण है कि घर–घर में रामायण पढ़ी जाती है, क्योंकि वह भ्रातृ–प्रेम और त्याग का प्रतीक है; परन्तु महाभारत कम पढ़ी जाती है, क्योंकि उसमें पारिवारिक कलह का दुखद चित्रण है।

योगदर्शन में कहा गया है कि सिद्ध योगी के लिए दूरी बाधा नहीं होती। जब द्रौपदी ने पुकारा, तो श्रीकृष्ण जी ने योगशक्ति से उसकी लज्जा की रक्षा की। गीता में उन्होंने अर्जुन को यह ज्ञान दिया – "मैं जन्म–जन्मान्तर की बातें जानता हूँ।"

यह योगी की विशेषता है कि वह चित्त का संचार कर सकता है। जैसे आज हम किसी का डाटा कॉपी करते हैं, वैसे ही योगी दूसरे के चित्त को जान सकता है। इससे सिद्ध होता है कि श्रीकृष्ण केवल राजनेता या वीर योद्धा ही नहीं, बल्कि परम योगी थे।

श्रीकृष्ण के जीवन के दो स्वरूप प्रचलित हैं – एक है वैदिक स्वरूप – महाभारत और गीता में वर्णित, जो उन्हें योगेश्वर, धर्मसंस्थापक और महान योगी के रूप में प्रस्तुत करता है।

दूसरा है पौराणिक स्वरूप – भागवत आदि में प्रस्तुत, जिसमें अनेक कथाएँ जोड़ी गयीं और मूल वैदिक स्वरूप विकृत हुआ।

उन्होंने कहा कि हम सबको चाहिए कि हम वैदिक स्वरूप को अपनाएँ और गीता से जीवन की प्रेरणा लें।

उन्होंने कहा कि हम सभी योगेश्वर श्रीकृष्ण जी के जीवन से प्रेरणा लेकर धर्म की रक्षा के लिए सदैव तत्पर रहें। असहाय, गरीब और समाज के उपेक्षित वर्ग की सेवा करें। यज्ञ, संस्कार और वेद–धर्म की परम्पराओं का पालन करें। अपने सामर्थ्य के अनुसार समाजसेवा में योगदान दें। तटस्थता और न्यायप्रियता को अपने जीवन का आधार बनायें।

अन्त में ब्रह्मचारी जी ने कहा कि इस आर्य समाज मारतहल्लि में सत्संग का आयोजन और प्रवचन का सौभाग्य हमें आदरणीय श्री एस. पी. कुमार जी एवं उनके सहयोगियों के पुरुषार्थ से प्राप्त हुआ है। मैं उनके इस प्रयास की हृदय से प्रशंसा करता हूँ।

ऋत् और सत्य क्या है?

आर्य समाज, मारतहल्लि, बेंगलुरु के 24 अगस्त, 2025 के रविवारीय सत्संग में धर्माचार्य आचार्य श्री रामतीर्थ शास्त्री जी ने ईश्वरोपासना के प्रथम मंत्र के उच्चारण के पश्चात् वैदिक धर्म के मौलिक सिद्धांतों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि मनुष्य ने संसार की असंख्य वस्तुओं को जानने का प्रयास किया है, परन्तु जो सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का स्वामी है, उस सर्वशक्तिमान ईश्वर को जानने और समझने का प्रयत्न बहुत कम लोग करते हैं।

उन्होंने स्पष्ट कहा कि वेद ही हमारा परम धर्मग्रंथ है। जब भी धर्मग्रंथ की बात हो, तो आर्यजन निःसंकोच होकर कह सकते हैं कि 'हमारा धर्मग्रंथ केवल वेद है।' जहाँ धर्म की परिभाषा और जीवन के शाश्वत नियम मिलते हैं, वही वेद है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने भी उद्घोष किया है – "वेद का सुनना और सुनाना ही सबका परम धर्म है।"

वास्तविक कथा वही है, जहाँ वेद की व्याख्या और अनुशीलन हो, और यही पुण्यकर्म आर्य समाज के मंदिरों में निरंतर देखने को मिलता है।

ईश्वर और मनुष्य के निर्माण के अन्तर को शास्त्री जी ने उदाहरणों से समझाया कि ईश्वर की रचना और मनुष्य की रचना में कितना अंतर है। मनुष्य सब्जी बनाता है और कहता है कि मैंने यह बनाया। परंतु वह सब्जी एक–दो दिन में नष्ट हो जाती है। जबकि वही आलू, धान, फल या अन्न जब तक प्राकृतिक अवस्था में रहता है, तब तक महीनों–सालों तक सुरक्षित रहता है, क्योंकि उसका निर्माण ईश्वर

ने किया है। इसी प्रकार, ईश्वर द्वारा रचित सृष्टि पूर्ण है, जबकि मनुष्य की बनाई हुई वस्तुएँ सदैव अपूर्ण और परिवर्तनशील होती हैं।

सृष्टि की रचना के सम्बन्ध में शास्त्री जी ने बताया कि ईश्वर किस प्रकार से गर्भ में शिशु की रचना करता है, यह रहस्य हमारी आँखों से अदृश्य है। ईश्वर द्वारा बनाई गई वस्तुओं को देखकर मनुष्य नतमस्तक हो जाता है – पहाड़, नदियाँ, पुष्प, झीलें – ये सब उसकी महानता के साक्षी हैं।

ऋग्वेद के दशम मण्डल में अघमर्षण सूक्त आता है, जिसमें सृष्टि की उत्पत्ति का संक्षिप्त रहस्य प्रकट होता है।

ऋत् और सत्य के वैदिक सिद्धान्त के सम्बन्ध में शास्त्री जी ने समझाया कि –

ऋत् = सृष्टि के अटल, शाश्वत और अपरिवर्तनीय नियम।

सत्य = वह रूप, जो वर्तमान में हमें दिखता है पर परिवर्तनशील है।

उन्होंने उदाहरण दिया कि आर्य समाज मंदिर का निर्माण पहले श्री एस.पी. कुमार जी और श्री तलवार जी के मन में और फिर कागज़ पर हुआ। वह नक्शा (योजना) ऋत् है – अपरिवर्तनीय। फिर मिस्त्रियों और श्रमिकों ने मिलकर जो इमारत बनाई, वह सत्य है, क्योंकि कारीगर बदल सकते हैं, कार्य–प्रक्रिया बदल सकती है, पर मूल नक्शा (ऋत्) नहीं बदलता।

इसी प्रकार, सूर्य का पूर्व से उदय होना ऋत् है, सृष्टि का संचालन ऋत् है। यही आज के वैज्ञानिक, नियमों के रूप में खोज रहे हैं।

शास्त्री जी ने कहा कि जब हम ईश्वर को अपना सर्वस्व मान लेते हैं, तो हमें चिंता करने की आवश्यकता नहीं रहती। जिस प्रकार घर के बच्चे निश्चिन्त रहते हैं कि भोजन, दूध, अनाज आदि की चिंता माता–पिता करेंगे, वैसे ही जब हम पूर्ण श्रद्धा से ईश्वर को स्वीकार कर लेते हैं, तो सभी भार ईश्वर स्वयं वहन करते हैं। इसलिए हमारा कर्त्तव्य है कि ईश्वर की उपासना करें, जो सृष्टि का निर्माता है। वेद–मंत्रों का अध्ययन और मनन करें। अपने भीतर के दुर्गुणों और दुर्व्यसनों को त्यागकर परोपकार और सत्कर्म को अपनाएँ।

शास्त्री जी ने आह्वान किया – हे आर्यजन! सृष्टि के रहस्य को जानने की जिज्ञासा सदैव जीवित रखो। वेद ही वह दिव्य स्रोत है, जिसमें समस्त ज्ञान, समस्त विद्याएँ और जीवन के सभी प्रश्नों का उत्तर मिलता है। ऋत् और सत्य के आधार पर चलकर हम जीवन को धर्ममय, ईश्वरमय और कल्याणकारी बना सकते हैं।

आर्य समाज की विचाराधारा को अपनाना होगा

आर्य समाज, मारतहल्लि, बेंगलुरु के 31 अगस्त 2025 के साप्ताहिक सत्संग तथा 18वें स्थापना दिवस के पावन अवसर पर अजमेर से पधारे आचार्य श्रद्धानन्द जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि –"मैं पिछले डेढ़ माह से कर्नाटक की भूमि पर आर्य समाज के प्रचार–प्रसार का कार्य कर रहा हूँ। वर्तमान में मेरा निवास अजमेर (राजस्थान) में है, परन्तु प्रत्येक वर्ष श्रावण मास में मैं कर्नाटक आता हूँ और महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की दिव्य विचारधारा के प्रचार हेतु लोक–जागरण करता हूँ। इसे मैं अपना सौभाग्य मानता हूँ। सेवाकाल से निवृत्त होने के पश्चात् मेरा अधिकतर समय वैदिक धर्म के प्रचार–प्रसार में ही व्यतीत होता है।"

उन्होंने बताया कि इस समय पूरे भारतवर्ष में आर्य समाज का 150वाँ स्थापना वर्ष मनाया जा रहा है, और आज हम सब मिलकर आर्य समाज मारतहल्लि का 18वाँ स्थापना दिवस भी मना रहे हैं। यह हम सबके लिए सौभाग्य का विषय है। इस आर्य समाज का भव्य भवन यहाँ की सक्रियता और समर्पण का प्रतीक है। जहाँ अनेक स्थानों पर आर्य समाज निष्क्रिय हो गये हैं, वहीं आर्य समाज मारतहल्लि अपने प्रारम्भ से ही महर्षि दयानन्द जी के आदर्शों पर अग्रसर है। इसके संचालन में विशेष योगदान फकीरे दयानन्द श्री एस.पी. कुमार जी और उनकी पूरी टीम का है, जो पूर्ण तन्मयता और निष्ठा से सेवा कर रही है।

आचार्य जी ने अपने प्रवचन में त्रैतवाद (ईश्वर, जीव और प्रकृति – तीन सत्य सत्ता) का विस्तृत विवेचन किया। उन्होंने वेदमंत्रों के आधार पर समझाया कि – ईश्वर सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ, अजन्मा और अनादि है। जीवात्मा शरीर से भिन्न है। जब जीव निकल जाता है तो शरीर मात्र मिट्टी बन जाता है। प्रकृति जड़ है, परन्तु ईश्वर और जीव के सहयोग से यह जगत उत्पन्न, स्थित और लय को प्राप्त होता है।

उन्होंने कहा कि आज लोग मिथ्या आडम्बरों और पाखण्ड में फँसकर अनेक "बाबाओं" के पीछे भीड़ एकत्रित करते हैं, जबकि ईश्वर एक ही है, जो कण–कण में विद्यमान है। हमारा कर्त्तव्य है कि हम समाज को सच्चे ईश्वर की पहचान कराएँ और उसकी महिमा का गायन करें।

आचार्य जी ने कहा कि "ईश्वर ने हमें सन्तान, धन, पशु, अन्न, भूमि और अनेक ऐश्वर्य प्रदान किये हैं, परन्तु हम भूलकर केवल भोग–विलास में लिप्त रहते हैं। यही कारण है कि आज दुःख बढ़ रहे हैं। ईश्वर का धन्यवाद और परोपकार का आचरण छोड़कर केवल स्वार्थ में जीना ही कष्ट का कारण है। जो कुछ हमें प्राप्त है वह परमात्मा का है, हमें उसका त्यागपूर्वक, मर्यादा से भोग करना चाहिए।"

उन्होंने भूमि और संपत्ति के उदाहरण से समझाया कि – "भूमि सदा स्थिर रहती है, केवल उसके स्वामी बदलते रहते हैं। अतः वास्तविक स्वामी परमात्मा ही है। वही सम्पूर्ण सृष्टि का रचयिता और पालनकर्ता है। जिसने हमें निःस्वार्थ भाव से सबकुछ दिया, उसका प्रतिदिन आभार मानना हमारा धर्म है।"

उन्होंने धर्मचतुष्टय (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) का विवेचन करते हुए कहा कि "जीवन का परम लक्ष्य मोक्ष है, जो ब्रह्मलोक की प्राप्ति से संभव है। संसार की वस्तुओं का त्यागपूर्वक भोग करते हुए हमें परमात्मा की शरण ग्रहण करनी चाहिए।"

अन्त में आचार्य जी ने आर्य समाज के उद्देश्यों की ओर प्रेरित करते हुए कहा कि "यदि हम महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की विचारधारा और आर्य समाज के सिद्धान्तों पर कार्य करेंगे तभी आर्य समाज का भवन सार्थक होगा। अन्यथा यदि हम अन्धविश्वास और पाखण्ड में उलझे रहेंगे तो इसका कोई लाभ नहीं। किसी भी संगठन की प्रगति उसके सिद्धान्तों पर चलने से ही होती है। यहाँ मैं देखता हूँ कि श्री कुमार जी और उनकी टीम दिन–रात निःस्वार्थ भाव से कार्य कर रही है, और यही कारण है कि आर्य समाज मारतहल्लि निरन्तर उन्नति की ओर अग्रसर है।" अन्त में आचार्य श्रद्धानन्द जी ने आर्य समाज मारतहल्लि के 18वें स्थापना दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ प्रदान की।

सत्य को स्वीकार करो और असत्य को त्याग दो।

– महर्षि दयानन्द सरस्वती

ओ३म्

पवित्र वेद
स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

जुड़ने के लिए

कदम-1 अपने फोन में प्ले-स्टोर खोलकर टेलीग्राम डाउनलोड करें।

कदम-2 खोजें HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

कदम-3 इस ग्रुप को खोलें और श्रवपद बटन पर क्लिक करें।

कदम-4 इस ग्रुप का हैडर खोलें। Add Members के माध्यम से अपने सभी सम्पर्क वाले लोगों को इस ग्रुप में जोड़ दें।

स्वामी भक्तानन्द सरस्वती 091+99683 57171

माँ गायत्री योगाचार्या 091.93 12611898

ऋग्वेद-1.5.2

पुरूतमं पुरूणामीशानं वार्य्याणाम्।
इन्द्रं सोमे सचा सुते।।2।।

पुरूतमम् - परमात्मा, गलती का एहसास करवाकर न्याय का देने वाला

पुरूणाम् ईशानम् - धरती से आकाश तक असंख्य पदार्थों का निर्माता होने की शक्ति केवल परमात्मा में है

वार्य्याणाम् - अत्यन्त लाभदायक (समस्त निर्मित पदार्थ)

इन्द्रम् - परमात्मा, समस्त लाभदायक पदार्थों का देने वाला

सोमे - ज्ञान के माध्यम से प्राप्त समस्त वस्तुएँ

सचा - ज्ञान के द्वारा सम्पन्न प्रत्येक कार्य

सुते - गतिविधियों से उत्पन्न परिणाम

व्याख्या :-

दिव्य कार्य प्रणाली की श्रृंखला क्या है?

निःसंदेह धरती से आकाश तक समस्त सांसारिक पदार्थों का निर्माता केवल परमात्मा ही है। यह केवल उसी की योग्यता है। इस कार्य को कोई अन्य नहीं कर सकता। परन्तु उसकी न्याय करने की शक्ति, पुरूतमम्, को सदैव ध्या में रखना चाहिए। उसकी कार्य प्रणाली की श्रृंखला को सरलता पूर्वक इस प्रकार समझा जा सकता है :-

(1) सोमे - ज्ञान देता है।

(2) सचा - उस ज्ञान से लोग असंख्य गतिविधियाँ सम्पन्न करते हैं। प्रत्येक व्यक्ति में ज्ञान का स्तर भिन्न-भिन्न हो सकता है, इसलिए उनकी गतिविधियों की प्रकृति तथा गुणवत्ता भिन्न-भिन्न होती है।

(3) सुते - परमात्मा प्रत्येक व्यक्ति को उसकी गतिविधियों का परिणाम फल के रूप में देता है। यह फल गतिविधियों को सम्पन्न करने तथा मानसिक नियत के आधार पर निर्धारित होता है।

इसलिए हमें गहराई से समझना चाहिए कि परमात्मा ने सृष्टि के निर्माण के समय वेद ज्ञान प्रदान करके मनुष्यों को क्या निर्देश देने की इच्छा की। अन्यथा कम समझ के साथ या भावनाओं की कमी के कारण हमारे हाथ से गलत या अधूरे कार्य सम्पन्न होने की सम्भावना होगी और उसी के अनुसार हमें गलत या अधूरे परिणाम प्राप्त होंगे। यह परमात्मा का अनुशासन है क्योंकि प्रत्येक कार्य और नियत का फल देने की सर्वोच्च शक्ति परमात्मा के पास ही है।

जीवन में सार्थकता

ज्ञान, कर्म तथा फल

प्रत्येक स्थान पर हमें किसी न किसी अनुशासन का पालन करना ही होता है। वह स्थान हमारा घर हो, कार्यस्थल हो या समाज। जब भी हम कोई गलती करते हैं तो हमें दण्ड भोगना पड़ता है। यह कर्म और फल का सिद्धान्त है। परमात्मा ब्रह्माण्ड की सर्वोच्च शक्ति है, अतः कर्मफल सिद्धान्त की भी सर्वोच्च अधिकारिक सत्ता है। हमारे कार्य पूरी तरह दोषरहित हो सकते हैं यदि हम सृष्टि निर्माण के पीछे परमात्मा के विचारों को समझ लें। हमारी समझ उचित तथा पूर्णता के निकट होनी चाहिए।

कर्मफल का यह सिद्धान्त समाज के किसी भी क्षेत्र में सर्वमान्य रूप से लागू होता है। इसलिए जीवन के सभी पड़ावों को उचित तरीके से पार करने के लिए हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि :-

(1) हम अपने वृद्ध पुरुषों तथा उच्चाधिकारियों के विचारों और नियत को उचित प्रकार से समझें।

(2) उन विचारों के अनुसार किस प्रकार के कार्यों की आवश्यकता है।

(3) अपने कार्यों के परिणाम चाहे वो पुरस्कार के रूप में हो या दण्ड के रूप में, स्वीकार करने के लिए सदैव तैयार रहें।

यह नहीं भूलना चाहिए कि सर्वोच्च अनुशासन सत्ता हमें कई प्रकार के भौतिक लाभ और सुविधाएँ प्रदान करती है इसलिए हमें उनके विचारों और नियत के अनुशासन में रहकर ही कार्य करना चाहिए।

Aum
Holy Vedas
Study and Research Program
Join
Step-1 Open play store to download TELEGRAM app. in your phone.
Step-2 Search **HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM**
Step-3 Open this group. There is a join option at the bottom. Join it.
Step-4 Open the header of the group, click Add Members to add all of your contact persons in this group.
Swami Bhaktananda Saraswati 091-9968357171
Maa Gayatri Yogacharya 091-9312611898

Rigveda-1.5.2

पुरूतमं पुरूणामीशानं वार्याणाम् ।
इन्द्रं सोमे सचा सुते ।।2।।

Purutamam purunaamishaanam
vaaryaanaam
Indram some sacha sute.

Purutamam : God, the dispenser of justice by creating a feeling of guilt

purunaam ishaanam : Only God is competent to create innumerable objects from ether to earth

vaaryaanaam : extremely beneficial (are all such obects)

Indram : God, the giver of all useful things

some : everything obtained through knowledge

sacha : every work performed with knowledge

sute : results derived from activities.

Elucidation

What is the chain of Divine working?

Of course, God is the only creator of all worldly objects from ether to earth. It's only His competence. None else can do this. But His power of dispensing justice, purutamam, must be kept in mind. Thus, the chain of His working can be easily understood as follows :-

(i) some - gives knowledge,

(ii) sacha - people perform innumerable activities with that knowledge. Since the level of understanding knowledge may be different therefore activities are also different in nature and quality.

(iii) sute - God gives results/fruits of all such activities to each individual as per their respective performance and intentions.

Therefore, we must try to understand deeply what God wished to ordain all human beings at the time of creation by imparting Vedas. We must emotionally go deep while understanding Divine knowledge. Otherwise, with lesser understanding or lack of emotions, we are likely to perform wrong or incomplete acts and accordingly we would get wrong or incomplete results. It is God's discipline because of His Supreme Power of granting rewards according to our actions and intentions.

Practical Utility in life

Knowledge, Actions and Rewards i.e. gyaan, karma and phala.

Everywhere we are required to follow one or the other discipline at home, workplace or in the society. Whenever we commit any wrong, we are subjected to punishment. This is action and reward i.e. karma-phala, principle. God is the Supreme Power of the universe and hence the Supreme Authority of this action and reward principle. Our acts would be faultless if we understand His idea behind the creation of universe. Our understanding should be proper and near complete sense.

This rule of action and reward is universally applicable in any walk of the society. Therefore to properly pass over all stages of life we must ensure :

(i) Proper understanding of the ideas and intents of our elders and superiors,

(ii) Actions according to those ideas,

(iii) Be ready to accept the results, rewards or punishments, of your activities.

Don't forget that the Supreme Disciplinary Authority give us many worldly benefits and facilities. Therefore, we must act in their respective discipline of ideas and intents.

पृष्ठ 1 का शेष

आर्य समाज मारतहल्लि, बंगलौर का 18वाँ स्थापना दिवस एवं सत्संग समारोह पूर्वक हुआ सम्पन्न

समाज की स्थापना की। उन्होंने कहा – "हमें सत्य को स्वीकार करते हुए कृण्वन्तो विश्वमार्यम् के आदर्श पर निरन्तर आगे बढ़ते रहना चाहिए। यद्यपि सम्पूर्ण संसार को आर्य नहीं बनाया जा सकता, परन्तु हमें अपने आचरण से समाज को वैदिक पथ दिखाते रहना है। विश्व शांति की स्थापना केवल वैदिक संस्कृति के माध्यम से ही सम्भव है।"

अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में श्री कुमार जी ने कहा – आज से 18 वर्ष पूर्व हमने सबने मिलकर इस आर्य समाज की स्थापना की थी। इसका उद्देश्य महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की विचारधारा को जन–जन तक पहुँचाना तथा सेवा और परोपकार के कार्यों को आगे बढ़ाना है। इस समाज की स्थापना और विकास में अनेक महानुभावों का योगदान रहा है, जिनके प्रति मैं कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ। दक्षिण भारत में कार्य आरम्भ करते समय अनेक संघर्ष आये, किन्तु धीरे–धीरे मार्ग सुगम होते गये और आज यह आर्य समाज निरन्तर उन्नति की ओर अग्रसर है।

इस अवसर पर वर्षभर आर्य समाज मारतहल्लि के लिए समर्पण हेतु श्री रवि भटनागर जी, श्री आशीष श्रीवास्तव जी, श्री अनिल आर्य जी (बेंगलुरु), स्व. डॉ. महावीर अग्रवाल जी की धर्मपत्नी श्रीमती वीना अग्रवाल जी, डॉ. विजय गोविल जी, एवं उनकी धर्मपत्नी डॉ. श्रीमती सुनिता गोविल जी का विशेष सम्मान किया गया।

आर्य समाज के प्रधान श्री एच.सी. शर्मा जी ने सभी आगन्तुक अतिथियों का हृदय से धन्यवाद किया। कार्यक्रम की सफलता में समाज के सभी पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

अन्त में वर्ष भर प्रस्तुतियों एवं योगदान को ध्यान में रखते हुए उपस्थित सभी बच्चों को पुरस्कृत किया गया। प्रधान श्री एच0सी0 शर्मा जी के धन्यवाद, शांति पाठ एवं ऋषि लंगर के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

79वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर
आर्य समाज मारतहल्लि, बंगलौर में राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा फहराया गया

स्वतंत्रता का सच्चा अर्थ – सत्य, ऋत् और धर्म है – फकीरे दयानन्द श्री एस.पी. कुमार

79वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर 15 अगस्त, 2025 को आर्य समाज मारतहल्लि, बंगलौर में उपस्थित आर्यजनों ने राष्ट्रीय ध्वज फहराकर देशवासियों को शुभकामनाएं प्रेषित की। इस अवसर पर गुरुकुल एटा के ब्र0 शिवस्वरूप जी भी उपस्थित रहे। अपने संक्षिप्त संदेश में श्री एस.पी. कुमार जी ने कहा कि यह दिन केवल राष्ट्रीय गर्व का प्रतीक नहीं, बल्कि वैदिक संस्कृति और आर्य समाज की मूल भावना को याद करने का अवसर भी है। स्वतंत्रता का अर्थ केवल अंग्रेज़ों की गुलामी से मुक्ति नहीं है, बल्कि सत्य, ऋत् और धर्म के अनुसार जीवन जीने की क्षमता है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने 'स्वराज्य' का जो विचार दिया था, उसका सार यही था कि हर व्यक्ति वेदों के आलोक में सत्य को जाने और समाज को अज्ञान, अंधविश्वास तथा अन्याय से मुक्त कराये।

हमारे स्वतंत्रता सेनानियों ने बलिदान देकर हमें यह अमूल्य स्वाधीनता दिलाई। हमारा कर्तव्य है कि हम इस स्वतंत्रता को केवल भौतिक नहीं, बल्कि आध्यात्मिक और सामाजिक स्तर पर भी सार्थक बनाएँ। आर्य समाज का संदेश है कि – शिक्षा को सर्वसुलभ बनाना, स्त्री–पुरुष समानता स्थापित करना, सत्य, अहिंसा और परोपकार को जीवन का आधार बनाना, यही सच्ची स्वतंत्रता की दिशा है। इस पावन अवसर पर सभी नागरिकों को संकल्प लेना चाहिए कि हम धर्मनिष्ठ, सत्यनिष्ठ और परोपकारी आर्य नागरिक बनकर राष्ट्र को और महान बनाएँगे।

आर्य समाज मारतहल्लि, बंगलौर के 18वें स्थापना दिवस की चित्रमय झलकियाँ

शुगर की आयुर्वैदिक औषधि की
निःशुल्क प्राप्ति हेतु सम्पर्क सूत्र

फकीरे दयानन्द श्री एस. पी. कुमार
93 42254131

कुमार अभिमन्यु
8073 3 03 088

52, (Sy. No. 38), L.N. Pura, Adjacent to The Brilliant School, Behind Bata Showroom,
ITPL Road, Kundalahalli Gate, Bangalore-560037